समास

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

शेषांश :—

(iv) विशेष्योभयपद कर्मधारय → जिस कर्मधारय समास में दोनों पद विशेष्य हो, उसे विशेष्योभयपद कर्मधारय कहते हैं। जैसे -

ब्राह्मण-दम्पति - ब्राह्मण है जो दम्पति।
आम्रवृक्ष - आम्र है जो वृक्ष।

(v) उपमान कर्मधारय समास → जिस कर्मधारय समास में पहला पद उपमान हो एवं दूसरा पद उपमेय हो, उसे उपमान कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे -

प्राणप्रिय- प्राण समान प्रिय।
विद्युच्चंचला- विद्युत जैसी चंचला।

(vi) उपमित कर्मधारय समास → जिस कर्मधारय समास में पहला पद उपमेय एवं दूसरा पद उपमान हो, उसे उपमित कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे –

चरणकमल – कमल समान चरण।
करकमल – कमल के समान कर (हाथ)।
नरसिंह – सिंह के समान नर।

(vii) रूपक कर्मधारय समास → जिस कर्मधारय समास में उपमान को उपमेय के समान न बतलाकर उसमें अभेद (आरोप) दिखलाया जाए, उसे रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे –

मुखकमल – मुख रूपी कमल/मुख ही कमल।
मुखचन्द्र – मुख रूपी चन्द्र/मुख ही चन्द्र।
विद्यारत्न – विद्या रूपी रत्न/विद्या ही रत्न है।

⇒ विशेष :– इस समास में उपमेय को ही उपमान बना दिया जाता है। उपमित

कर्मधारय एवं रूपक कर्मधारय के उदाहरण एक हो सकते हैं, केवल विग्रह के भेद से ही वे भिन्न समास के अन्तर्गत उद्धृत होते हैं।

⇒ **विशेष :-** जिससे किसी की उपमा दी जाए, उसे 'उपमान' और जिसकी उपमा दी जाए, उसे 'उपमेय' कहते हैं। जैसे -

घनश्याम - घन की तरह श्याम।
चरणकमल - कमल के समान चरण।

यहाँ 'घन' और 'कमल' उपमान हैं तथा 'श्याम' और 'चरण' उपमेय हैं।

— क्रमशः